बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 116 /2024) **Year: 5th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि:** 18/12/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ सब्जी मटरए आलूए पालकए मेथीए गाजरए मूलीए फ्रांस बीनए चुकंदरए शलजमए धनिया आदि की बुआई के लिए खेत तैयार कर लें तथा पखवाड़े के अंत में बुआई कर दें। ➢ पत्ता गोभीए फूल गोभीए गांठ गोभीए ब्रोकलीए मिर्चए टमाटरए बैगन शिमला मिर्च की पौध तैयार हो तो रोपाई करें। ➢ खरीफ सब्जियों की खड़ी फसल में समुचित नामी व रोग एवं कीट प्रबंधन करें। ➢ रोपाई की जाने वाली सब्जियों में नमी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण हेतु सूखी घास अथवा काली पॉलिथीन की मल्चिंग ;पलवारद्ध प्रयोग करके रोपाई करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	➢ रबी फसलों की बुवाई समय पर करना सुनिश्चित करें। ➢ खरीफ फसलों की कटाई के उपरान्त खेत अच्छी प्रकार तैयार करें। ➢ उत्तम प्रकार के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। ➢ फसलों की बुवाई उपयुक्त नमी की दशा में कतारों में करना अच्छा रहता है। ➢ खरपतवार की समस्या से बचने हेतु बुवाई के बाद 2–3 दिन के अन्दर फसल के अनुसार खरपतवारनाशी का प्रयोग करें। ➢ कम नमी की दशा में बुवाई पूर्व सिंचाई करना उपयुक्त होगा। बुंदेलखंड की मृदाओं में कार्बनिक कार्बन व फास्फोरस की कमी है तथा इसका उचित प्रबंधन तिलहन व दलहन फसलों के लिए आवश्यकहै. गोबर की खाद का 5 टन/ हेक्टेयर अथवा 2 टन / हेक्टेयर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग बुआई से 10-20 दिन पहले करें. ➢ **सरसों**: सिंचित दशा में 80:40:40:20 नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश और सल्फर (की.ग्रा./ हे) की दर से करें. असिंचित क्षेत्र में 50:25:25:20 (की .ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश व सल्फर का प्रयोग करें. सिंचित क्षेत्रों में फास्फोरस, पोटाश व सल्फर की पूरी मात्रा तथा नत्रजन कीआधी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय प्रयोग करें. असिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें. ➢ **दलहन**: चने के बीज को राइज़ोबियम कल्चर से उपचारित करने के पश्चात बुआई करें. 20:60:20 (की.ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग बुआई के समय करें.

		गेंहू–गेंहू की फसलमें 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये।फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बोवाई के समय प्रयोग करना चाहिये। शेष आधी मात्रा बोवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। यदि खेत में जिंक की कमी हो तो जिंक सल्फेट 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बोवाई के समय प्रयोग करना लाभदायक होता।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें। ➢ बरसीम एवं रिजका के खेत की तैयारी एवं बुआई करें। बरसीम फसल से अधिक उपज व लम्बी अवधि तक (मध्य जून) तक हरा चारा प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की बुआई करें। ➢ बरसीम की बुआई नये खेत में करनी हो तो बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करने पर अधिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। ➢ स्वच्छ जल पशुओं को पिलायें तथा दुहान से पूर्व अयन को धोयें। ➢ बैल बनाने के लिए छरूमास की आयु होने पर बछड़े को बधिया करवायें एवं निम्न गुणवत्ता के पशुओं का बधियाकरण करवायें। ➢ पशु ब्याने के 1 दृ 2 घन्टे के अन्दर नवजात बछड़ोंदृबछि्ड़यों को खीस अवश्य पिलायें। नवजात बछड़ोंदृ बछि्ड़यों को 10 दृ 15 दिन की आयु पर सींग रहित करवायें एवं उत्पन्न संततियों की उचित देखभाल करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ धान में सैनिक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। गंधी कीट के प्रकोप की दशा में फेनवेलरेट 0.04 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिये। ➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ जो किसान भाई सरसों की बुवाई करना चाहते है वे प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करे एवं बुवाई से पूर्व बीज को ताकत (कैप्टान 70% + हेक्साकोनाजोल 5%) अथवा थिरम 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें। ➢ जो किसान भाई रबी मौसम में दलहनी फसलों चना, मटर एवं मंसूर की फसल उगाना चाहते है सन्तुति किस्मों के प्रमाणित बीज, बीज उपचार हेतु कवकनाशी अथवा जैव कवकनाशी व राइजोबियम कल्चर प्रबन्ध करले । बुवाई से पूर्व बीज को वीटावैक्स पावर (थिरम 37.5% + 37.5% कारवाक्सिन) अथवा ताकत (कैप्टान 70% +

		हेक्साकोनाजोल 5%) 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें अथवा जैविक कवकनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर उपचारित करें । इसके बाद बीज को फसल विशेष राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। एक पैकेट 200 ग्राम कल्चर 10 किग्रा. बीज उपचार के लिए पर्याप्त होता है। अथवा आजकल बाजार में तरल कल्चर उपलब्ध उक्त राइजोवियम कल्चर की 5 मि0ली0 मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारीत कर छाया में सुखा लेते हैं फिर बीज की बुवाई करते हैं।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु–अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते है। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की बाग में फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मुलवृंत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहारा दें। ➢ फलदार पौधों के निचले हिस्से से निकले अनउत्तपादक सकर्स को हटा दें । कटे हिस्सों पर बोंडेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ फलदार पौधों के तने के चारो तरफ गहरी खुदाई करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सके, परन्तु जड़ों को तथा तनें को कोई नुकसान न पहुंचें। ➢ किन्नौ पौध प्रर्वधन हेतु जट्टी–खट्टी की पौध तैयार करने के लिये बीज की बुआई की जा सकती है। ➢ चश्मा चढ़ाने के लिये उपयुक्त समय है । इसकी तैयारी पुर्ववतः रखें । चश्मा चढाने से पहले मुलवृंत को एकल तना बना दें तथा आस–पास की सारी टहनियों को काट दें। ➢ अक्टूबर माह के अंत में जिस मुलवृंत में सफेद धारियां नजर आये उसे प्रर्वधन के लिये चुने। ➢ उत्तम किस्म के पौधे की आंख को प्रर्वधन के लिये चयन करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ वानिकी पौधशाला में स्वच्छता बनाए रखने के लिए यह सलाह दी जाती है कि क्षेत्र को खरपतवार मुक्त रखें और सभी क्षय / बेकार लकड़ी और मलबे को जला दें। जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	